गृहारम्भ विधिः
अर्थात्
शिलान्यास पूजन पद्धति

सम्पादक : पं० देवनारायण पाठक

प्रकाशक :
नारायण एण्ड को० बुकसेलर्स
सालिमपुर अहरा, पटना-3
फोन : 655702

M.Katyayana

मूल्य : 12.00 रु०

नींव-पूजन-सामग्री

रोरी, कपूर, कलाई (नारा), धूपबत्ती १ पैकेट, नौग्रह की पुड़िया १, फूलमाला ५० पैसे का, पान ५, सोपारी, बताशा सवापाव, फल ५, मिठाई (लड्डू) सवापाव, सिन्दूर, लावा, घी दीपक के लिए, रुई, चावल आधा पाव, गेहूँ का आटा (चौक पूरने के लिए)।

१ ताँबे की लोटिया, १ ताँबे की कटोरी (लोटिया का मुँह ढकने के लिए)।

१ खैर की खूँटी (१ अंगुल की), कच्चा दूध (आधा पाव), १ सोने का साँप ।

१ चाँदी का कछुआ, पंचरत्नी (सोना, चाँदी, ताँबा, मूँगा, पीतल १-१ टुकड़ा), सेतुआ १ छटाँक, सेवार (नदी-तालाब में जो घास होती है, १ मूठी), दूब १ मूठी । गोबर (गौर बनाने के लिए), १ मिट्टी का कुल्हड़, ५ मिट्टी का पियाला (कसोरा) आम की टेरी (वन्दनवार के लिए) । २ लाल कपड़े का टुकड़ा सवा-सवा गज ।

नया ईंटा – चूना, सीमेन्ट, बालू, मिस्त्री, मजदूर, राजगीर, कन्नी (करनी), बसूली । सब कुछ तैयार रखना चाहिये । चूँकि कन्नी (करनी), बसूली की भी पूजा की जाती है, अत: उसे धोकर कलाई, नारा बाँध कर नवग्रह के पास ही रख दें ।

* जय श्री विष्णु भगवान की *

* अपनी बात *

जो काम विधिपूर्वक तथा शुभ समय में नहीं किया जाता है, वह प्राय: निष्फल एवं दु:खदायी होता है । गृहारम्भ कर्म में ज्योतिष विचार और नींव रखने की विधि अत्यन्त आवश्यक है । शास्त्र के अनुसार मकान मालिक नींव में नाग, कच्छप आदि की पूजा करके पहले स्वयं कम-से-कम पाँच ईंट रख कर जोड़ें तब उसके बाद मिस्त्री, मजदूर, राजगीर को आगे की जुड़ाई करनी चाहिये । मैं ने बनारस एवं बम्बई की पुस्तकों में दो पद्धतियाँ देखी हैं,जिसका विधान आजकल के समय के अनुसार दुष्कर है, जैसे– पुण्याहवाचन, नान्दी श्राद्ध, वेदी का निर्माण, पंच भूसंस्कार तथा कुश-कण्डिका आदि का लम्बा-चौड़ा विधान सामान्य गृहस्थ के लिए कठिन है । सामान्यत: आजकल पंचदेव-पूजन करके ईंट की पूजा, पृथ्वी-पूजन, नाग, कच्छप आदि की पूजा की जाती है और फिर जुड़ाई का काम शुरु कर दिया जाता है । इस पुस्तक में इसी प्रचलित विधि को बताने का प्रयास किया गया है । यदि जनता और ब्राह्मणों का इससे कुछ भी लाभ पहुँचा, तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूँगा ।

प्रकाशक

भूमिका

भावानी शंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ ।
याभ्यां विना च पश्यन्ति सिद्धः स्वान्तस्थमीश्वरम् ॥

भारतीय धर्म तथा संस्कृति को हिन्दू धर्म के नाम से जाना जाता हे, जिसका आधार है– वर्ण-व्यवस्था और आश्रम । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र - ये चार वर्ण हैं । ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास– ये चार आश्रम हैं । जन्म से ही संस्कारों के द्वारा मनुष्य एक आश्रम से दूसरे आश्रम में प्रवेश कर अन्त में संन्यासाश्रम में जीवन का अन्त कर देने का पुराण, शास्त्रादि आदेश देते हैं । इन संस्कारों में विवाह-संस्कार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । इस संस्कार से संस्कारित होकर दो जीवन-साथी साथ चलने का संकल्प लेते हुए गृहस्थ-जीवन में प्रवेश करते हैं । यहीं से गृहस्थाश्रम का प्रारम्भ माना जाता है । यह आश्रम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष– इन चारों को प्राप्त करने का साधन बताया गया है, परन्तु इनको प्राप्त करने की क्रिया तभी सफल होती है, जब गृहस्थ का अपना गृह (घर) हो-"गृहस्थस्य क्रियास्सर्वा न सिद्ध्यन्ति गृहं विना।" अर्थात् गृहस्थों की सारी क्रियाएँ (पूजा, पाठ, जप, तप आदि) गृह के बिना सिद्ध नहीं होती हैं।

अब पुन: आगे भी शास्त्र कहता है– परगेहे कृता: सर्वा: श्रौतस्मार्तक्रियादिका: । निष्फला: स्युर्यतस्तासां भूमीश: फलमश्नुते ।। भाव यह है कि अन्य के गृह में किया हुआ श्रौतस्मार्तादि क्रियाएँ

निष्फल हो जाती हैं, अत: प्रत्येक गृहस्थ के पास अपना घर होना परमावश्यक है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जाय कि विवाह-संस्कार के समय पत्नी को दिया गया पाँचवाँ वचन (गृह,मन्दिर, बाग, तालाब, मन्दिर आदि को बनवाना तथा उनकी पूजा प्रतिष्ठादि करना) प्रत्येक गृहस्थाश्रम में प्रवेश करनेवाले प्राणी को पूरा करना चाहिये । अब तो देखने में ऐसा आता है कि देव, ऋषि, पितृ-यज्ञ, पूजा, श्राद्ध, विवाहादि भी किराये पर स्थान लेकर किया जाता है, जो यह अनुचित है । अपने नाम की भले ही झोंपड़ी हो, उसी में श्रौत-स्मार्तादि क्रियाएँ करनी चाहिये, तभी उन कर्मों की पूर्णता है ।

सर्वप्रथम गृह-निर्माण के लिए स्थान चुनें । अच्छे ज्येतिषी से ये विचार करवा लें कि किस दिशा में गाँव या शहर में बसने से शुभ होगा । फिर तत्सम्बन्धी दिशा में जो गाँव या शहर उपयुक्त हो वहाँ भूमि प्राप्त करें । पुन: किसी शुभ दिन प्रात: शौच, स्नानादि से निवृत्त होकर, अपने पुरोहित या ज्येतिषी के पास जाकर और प्रणाम कर प्रथम फावड़ा चलाने का मुहूर्त, नींव धरने का मुहूर्तादि पूछें ।

सुविधा तथा समयानुसार एक नया फावड़ा तथा नींव-पूजन की सम्पूर्ण सामग्रियाँ एकत्र कर लें । (नींव कर्म को शिलान्यास कर्म भी कहा जाता है) ।

ज्योतिषीय विचार

प्रचलित नाम राशि की ग्राह्यता-- कांकिणी में, वर्ग शुद्धि में, जुआ में, वाद-विवाद (मुकदमा) में, गृहारम्भ या प्रवेश में, मंत्र ग्रहण में और उढ़री (दूसरी स्त्री जो बिना विवाह-संस्कार के रख ली जाती है, रखैल ।) के वरण में प्रचलित नाम राशि की प्रधानता होती है । तात्पर्य यह है कि गृह-विचार में पुकारे जानेवाले नाम को महत्त्व देना चाहिए ।

ग्राम विचार-- अपनी नाम-राशि से जिस ग्राम, शहर, मुहल्ले में बसने की इच्छा हो, उस ग्रामादि की नाम-राशि १, ७ हो, तो शत्रुता अर्थात् ठीक नहीं है, ३, ६ हो, तो हानि और ४, ८, १२ हो, तो रोग होता है, २, ५, ९, १०, ११ हो, तो शुभ फल कहना चाहिये।

गृ०

शि०

८

वर्ग-विचार

वर्ग का क्रम संख्या	नाम का प्रथम अक्षर	वर्ग के नाम	स्वामी
(१)	अ से अः तक	अ वर्ग	गरुण
(२)	क से ङ तक	क वर्ग	मार्जार
(३)	च से ञ तक	च वर्ग	सिंह
(४)	ट से ण तक	ट वर्ग	श्वान
(५)	त से न तक	त वर्ग	सर्प
(६)	प से म तक	प वर्ग	मूषक
(७)	य र ल व	य वर्ग	मृग
(८)	श ष स ह क्ष त्र ज्ञ	श वर्ग	अज

गृ०

शि०

९

उपर्युक्त आठ वर्गों में अपने वर्ग से गिनें, पाँचवाँ वर्ग शत्रु होता है। ग्राम या मुहल्ला या शहर का वर्ग पाँचवाँ आये, तो अशुभ है, गरुण-सर्प, मार्जार-मूषक, सिंह-मृग तथा श्वान-अज वर्ग में शत्रुत्व स्वभाव जन्मजात होता है। प्रायः शत्रु का सम्बन्ध अच्छा नहीं होता है, परन्तु अपना वर्ग शक्तिशाली हो और भारी पड़े तो शुभ समझना चाहिये। जैसे—आपका वर्ग गरुण वर्ग में हो और ग्राम का वर्ग सर्प वर्ग में हो, तो ठीक है, लेकिन यदि आपका वर्ग सर्प हो तथा ग्राम का वर्ग गरुण हो, तो यह शुभ नहीं कहा जायेगा।

कांकणी विचार— अपने नाम के वर्ग की क्रम संख्या को दूना कीजिये और ग्राम के नाम के वर्ग की क्रम संख्या से जोड़िये। ठीक इसी प्रकार ग्राम के नाम के वर्ग की क्रम संख्या को दूना कर इसमें अपना वर्ग जोड़िये। दोनों में ८ का भाग दीजिये। जिसका शेष

अधिक होगा वह ऋणी कहा जायगा । इसी को 'ऋणी-धनी विचार' भी कहते हैं ।

गणना विचार– वर-वधू के गणना-विचार की भाँति पंचांग से इसे भी विचार कर लेना चाहिए । अपने को वर तथा ग्राम को कन्या की भाँति मान कर यह विचार करना चाहिये । २० गुण से ऊपर बैठे, तो शुभ अन्यथा अशुभ माना जाना चाहिये ।

वास्तु-भूमि-विचार–

(१) गजपृष्ठ भूमि– जिस स्थान में दक्षिण, पश्चिम, नैर्ऋत्य और वायव्य कोण की ओर भूमि ऊँची हो, उसको गजपृष्ठ कहा गया है । उसमें घर बना कर बसने से धन-धान्य, संतान और आयु की वृद्धि होती है ।

(२) कूर्मपृष्ठ – जहाँ मध्य में उच्च हो और चारों दिशाओं में झुकाव

हो, कूर्मपृष्ठ कहलाता है । उस स्थान में वास करने से नित्य, उत्साह, धन-धान्य, संतान, आरोग्य, यश और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है ।

(३) दैत्य पृष्ठ – ईशान कोण, पूर्व और अग्नि कोण में उच्च हो और पश्चिम में नीचा हो, तो वह भूमि दैत्य पृष्ठ कहलाती है । उसमें वास करने से अशुभ फल कहा गया है ।

(४) नाग पृष्ठ – जहाँ दक्षिण और उत्तर दोनों दिशा में उच्च हो, बीच में नीचा हो, वह स्थान नाग पृष्ठ कहलाता है, जो वास करने में अत्यन्त अशुभ कहा गया है ।

(क) ब्राह्मणी भूमि – जहाँ की मिट्टी श्वेत वर्ण की और कोमल हो, वह ब्राह्मणी भूमि कही गयी है, जो ब्राह्मणों के लिए विशेष शुभ-प्रद है ।

(ख) क्षत्रिया भूमि – जहाँ की मिट्टी लाल देखने में आये,

वह क्षत्रिया (क्षत्राणी) भूमि क्षत्रियों के लिए शुभप्रद है ।

(ग) वैश्या भूमि – जहाँ की मिट्टी का रंग पीला हो, वह भूमि वैश्यों के लिए शुभप्रद होती है ।

(घ) शूद्रा भूमि – जहाँ की मिट्टी काली हो, वह स्थान शूद्रों के बसने योग्य है ।

चारों वर्ण अपने-अपने वर्ण की भूमि में वास करें, तो शुभ फल कहा गया है । ब्राह्मणों के लिए सब भूमि बसने योग्य कही गयी है और क्षत्रियों के लिए ब्राह्मणी भूमि के अतिरिक्त शेष तीनों भूमि पर घर बनाने के लिए कहा गया है । वैश्यों के लिए शूद्रा भूमि को भी ग्रहण करने को शुभ बताया गया है । हाँ, शूद्र केवल शूद्रा भूमि में ही वास करें ।

उपर्युक्त विचार वास्तव में राजाओं आदि के लिए (जिनके पास

अधिक भूमि हो, उनके लिए) कहा गया है । अधिकतर ऋषियों का मत है कि "मनश्चक्षुषोर्यत्र सन्तोषो जायते भुवि । तत्र कार्यगृहं सर्वैरिति गर्गादि सम्मतम् ॥" अर्थात् मनुष्य को जहाँ की भूमि पसन्द हो, वहाँ घर बना कर बसें, ऐसा गर्गादि मुनियों की सम्मति है ।

वास्तु भूमि की लम्बाई उत्तर-दक्षिण होनी चाहिए अथवा चौकोर भूमि में वास करना चाहिए । पूर्व-पश्चिम लम्बाई में अशुभ फल कहा गया है ।

सामने (आगे) की चौड़ाई अधिक होने से वह भूमि 'व्याघ्रमुखी' बतायी गयी है, जो कि अशुभ है और आगे की चौड़ाई कम होने से वह भूमि 'गोमुखी' कही गयी है, जो शुभ है ।

गृ० शि०

निम्न प्रकार के घर अशुभ माने गये हैं –
(१) पंचक, (२) व्याघ्र मुख, (३) त्रिकोण, (४) वर्तुलमुख ।
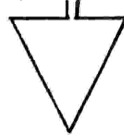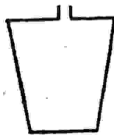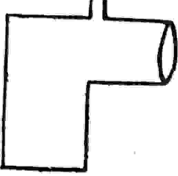
फल –

(१) पंचक– दारिद्र्य और शारीरिक पीड़ा ।
(२) व्याघ्र मुख– वंश क्षय ।
(३) त्रिकोण – मानसिक अशान्ति, बीमारी, कर्ज, फौजदारी ।
(४) वर्तुलमुख – चोरी, व्यभिचार, गृह-कलह ।

गृ० शि०

अब निम्न प्रकार के घरों का चित्र देखिये जो शुभ माने गये हैं--
(१) गोमुख (२) चतुरस्र
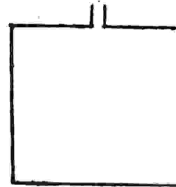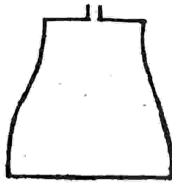
फल–

(१) गोमुख – वंश की वृद्धि एवं सम्पन्नता ।
(२) चतुरस्र – धन-धान्य की वृद्धि एवं सर्वसुख ।

जिस भूमि में मकान बनाना है, उस भूमि में सूर्यास्त के समय एक हाथ चौकोर और एक गहरा गड्ढा खोद कर जल से भर दें। प्रातः यदि जल शेष रहे, तो शुभ, नहीं रहे तो मध्यम और यदि गड्ढा फट जाय, तो अशुभ भूमि समझनी चाहिये।

नींव खोदने में पहले पत्थर, ईंट, धन, ताँबा आदि मिलने से सुख, लाभ और शुभ होता है। यदि कपाल, हड्डी, कोयला, केश आदि मिलें, तो कष्ट तथा अशुभ होता है।

मण्डलेश विचार– गृहस्वामी के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई नाप कर, दोनों के योग को दूना करके ८ से भाग देने पर शेष १ में इन्द्र, २ में विष्णु, ३ में यम, ४ में वायु, ५ में कुबेर, ६ में शिव, ७ में ब्रह्मा, ८ या ० शेष में गणेश उस भूमि के मण्डलेश होते हैं तथा नाम के जैसा फल भी होता है।

मण्डलेश विचार का दूसरा प्रकार– लम्बाई-चौड़ाई के योग में ९

से भाग देने पर शेष १ में दाता, २ में भूपति, ३ में नपुंसक, ४ में चोर, ५ में विचक्षण, ६ में भोगी, ७ में धनाढ्य, ८ में दरिद्र एवं ० में कुबेर मण्डलेश होते हैं।

चन्द्र-सूर्य वेध विचार – चन्द्र-वेधी गृह होना चाहिये और सूर्य-वेधी जलशय होना चाहिये। ह्रद या बाटिका सूर्य-वेधी और चन्द्र-वेधी दोनों शुभ मानी जाती है। पूर्व-पश्चिम लम्बा मकान सूर्य-वेधी होता है और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्र-वेधी होता है। घर चन्द्र-वेधी ही शुभ होता है। चन्द्र-वेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि होती है। सूर्य-वेधी मकान धन तथा कुल दोनों का नाश करने वाला होता है। बाग-बगीचा सूर्य-वेधी और चन्द्र-वेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय या मन्दिर के लिए सूर्य- वेधी और चन्द्र-वेधी का विचार नहीं होता।

गृ॰ शि॰

शिलान्यास – पहिले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अन्दर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिए, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों ओर स्थापित करना चाहिए ।

राशिद्वार का निर्णय – कर्क, वृश्चिक, मीन (ब्राह्मण वर्ण की) राशि वालों को पूर्व दिशा का, मेष, सिंह, धनु (क्षत्रिय वर्ण की) राशिवालों को उत्तर दिशा का, वृष, कन्या, मकर (वैश्य वर्ण की) राशि वालों को दक्षिण दिशा का और मिथुन, तुला, कुम्भ (ये राशियाँ शूद्रवर्ण हैं) इन राशि वालों को पश्चिम दिशा का द्वार शुभ होता है ।

गृह-द्वार का निर्णय – मकान के जिस भाग में द्वार करना है,उस भाग को ९ भाग करके ५ दक्षिण और ३ भाग वाम में छोड़ कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिये । वाम, दक्षिण का अर्थ मकान

गृ॰ शि॰

से निकलते समय का लेना चाहिए ।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का निषेध – ब्रह्मा के मन्दिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव मन्दिर के सामने, जैन मन्दिर के पीछे, देवी मन्दिर के किसी भी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

दरवाजों (किंवाड़ों) का फल– कपाट (दरवाजा) स्वयं खुलता हो, तो उन्माद, स्वयं बन्द हो, तो कुल नाश, प्रमाण से अधिक हो, तो राज भय, प्रमाण से कम हो, तो चोर भय आदि का कष्ट होता है । द्वार के ऊपर द्वार नहीं रखना चाहिये । किंवाड़ पतले होने से अशुभ, विशेष मोटे होने से क्षुधा भय, टेढ़े से गृह-स्वामी को कष्ट, अन्दर की तरफ टेढ़े से स्वामी को मृत्यु कारक, बाहर की तरफ टेढ़े होने से विदेश वास, दूसरी दिशा में टेढ़े होने

से चोर का भय रहता है ।

आँगन विचार– घर के मालिक के हाथ से आँगन की लम्बाई तथा चौड़ाई के योगफल को ४ से गुणा कर ९ का भाग देने से १ शेष हो तो दाग, २ में विचक्षण, ३ में भीरु, ४ में कलह, ५ में नृप, ६ में दानव, ७ में क्लीव, ८ में चोर तथा ० में धनी संज्ञक आँगन होता है । नाम के तुल्य ही इनका फल भी समझना चाहिये ।

घर का नाप – घर का नाप गज, फिट, इंच, मीटर, से॰ मी॰ आदि किसी में हो सकता है, परन्तु गृह-स्वामी के हाथ के नाप का कुछ अपना ही महत्त्व है । जितनी भूमि में घर बनाना है या बना है, उतनी ही भूमि के नाप से फल का विचार किया जाता है ।

चरणी विचार – लम्बाई-चौड़ाई जोड़कर ८ से भाग दें । १ शेष हो, तो पशु की हानि, २ शेष रहे, तो पशु-रोग, ३ शेष रहे,

तो पशु-लाभ, ४ हो, तो पशु का नाश, ५ हो तो पशु-हानि, ६ हो, तो पशु-वृद्धि, ७ हो, तो पशु भेद तथा ० शेष रहे, तो बहुत पशु हों ।

विशेष विचार– घर के अत्यन्त पास पाकड़, पीपल, इमली, कैथा, काँटे वाले और दूध वाले वृक्ष न होने चाहिये । विशेषतः घर के दक्षिण और पश्चिम भाग में इनका होना निषिद्ध है, क्योंकि इनके होने से धन की हानि होती है ।

कुआँ घर के मुख्य द्वार से पूर्व, ईशान, उत्तर और पश्चिम में होने से धन और सौभाग्य की वृद्धि होती है और दिशाएँ अनिष्ट कारक ही हैं । नलकूप या नल आँगन से पूर्व उत्तर की ओर होना चाहिए ।

घर के खम्भे उसके पैर होते हैं, अतः घर या कुएँ में जो खम्भे लगवाये जायँ वे सम संख्या में लगवाये जायँ । हाँ, छत की कड़ी,

गार्डर आदि विषम संख्या में ठीक होता है ।

भूमि का लेन-देन – गुरु और शुक्रवार, १, ५, ६, ११, १५ तिथि तथा मृगशिरा, पुनर्वसु, अश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, विशाखा, अनुराधा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तरा भाद्रप्रद – इन नक्षत्रों में भूमि का सौदा करना शुभ है ।

नल लगवाने का मुहूर्त– अनुराधा, हस्त, तीनों उत्तरा, रोहिणी, धनिष्ठा, शतभिषा, मघा, पूर्वाषाढ़, रेवती, पुष्य, मृगशिरा नक्षत्र हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र दशम् भाव में हो और पाप ग्रह निर्बल हो, तो शुभ है । २, ४, १०, ११, १२ लग्न हो, तो अति उत्तम है ।

आय विचार– गृह-स्वामी घर बनवाने योग्य भूमि को अथवा बने-बनाये घर को खरीदने के लिए अन्दर से अपने ही हाथ से

नापें।

हस्तादि लम्बाई-चौड़ाई को परस्पर गुणा करें, फिर गुणनफल में आठ का भाग दें । जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं । १ ध्वजा, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ गज और ८ (०) ऊँट । इसमें १, ३, ५, ७ अर्थात् विषम संख्या की आय शुभ और २, ४, ६, ० अर्थात् सम संख्या को अशुभ जानना चाहिये । गृह-भूमि को अन्दर से मापना चाहिये और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिये । ३२ हाथ लम्बे-चौड़े घर के लिए आयादि के विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही । ब्राह्मण को ध्वजा, क्षत्रिय को सिंह, वैश्य को गज और शूद्र को वृषभ आय विशेष शुभ होती है ।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान– घर (भूमि) के क्षेत्रफल

(हस्तादि लम्बाई-चौड़ाई के गुणनफल) को ८ से गुणा कर २७ से भाग दें, जो शेष अंश रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ का भाग दें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम रहे, तो शुभ अन्यथा अशुभ जानना चाहिये।

गृहराम्भ में मुहूर्त विचार– मकान की नींव धरने के मुहूर्त के विषय में ९ बातों का ध्यान रखना चाहिये। १. शेषनाग, २. पृथ्वी की शयन-अवस्था, ३. घात चन्द्र, ४. मास तिथि, ६. दिन, ७. नक्षत्र, ८. योग एवं ९ लग्न। अब आगे अलग-अलग विचार किया जा रहा है।

१. शेषनाग– सिंह, कन्या, तुला के सूर्य में शेषनाग का मुख ईशान में रहता है, अग्नि दिशा में खोदें और नींव धरें। वृश्चिक, धन, मकर के सूर्य में शेष के मुख वायव्य में रहता है, अतः ईशान

में खोदें और नींव रखें। कुम्भ, मीन, मेष के सूर्य में शेष का मुख नैर्ऋत्य में होता है, वायव्य में खोदें और चिनें तथा वृष, मिथुन, कर्क के सूर्य में शेष का मुख अग्नि दिशा में रहता है, इसलिये नैर्ऋत्य में नींव के लिए खुदाई करें।

यदि शेषनाग के सिर पर खुदवायें, तो माता-पिता की हानि हो और पीठ पर खुदवायें तो भय, रोग, पीड़ा हो, पूँछ पर खुदवायें, तो तीन गोत्र की हानि होवे और जो खाली जगह पर खुदवायें, तो स्त्री, पुत्र, धन इत्यादि का लाभ हो।

२. पृथ्वी शयन– सूर्य के नक्षत्र से ५, ९, १२, २० एवं २६वें नक्षत्र पर पृथ्वी सोती है। सोती हुई पृथ्वी पर तालाब, बावड़ी, कुँआ, नल, ट्यूबवेल तथा मकान इत्यादि के लिए पृथ्वी खुदवाना हानिकारक है।

गृ० शि०

३. घात चन्द्र पुरुषों के लिए– मेष राशि वालों के लिए मेष का चन्द्र, वृष राशि वालों के लिए कन्या का चन्द्र, मिथुन राशि वालों के लिए कुम्भ का चन्द्र, कर्क राशि वालों के लिए सिंह का चन्द्र, सिंह राशि वालों के लिए मकर का चन्द्र, कन्या राशि वालों के लिए मिथुन का चन्द्र, तुला राशि वालों के लिए धनु का चन्द्र, वृश्चिक राशि वालों के लिए वृष का चन्द्र, धनु राशि वालों के लिए मीन का चन्द्र, मकर राशि वालों के लिए वृश्चिक का चन्द्र, कुम्भ राशि वालों के लिए धनु का चन्द्र, मीन राशि वालों के लिए कुम्भ का चन्द्र घात चन्द्र होता है ।

स्त्रियों के लिए – मेष राशि वाली स्त्री के लिए मेष का चन्द्र, वृष राशि वाली स्त्री के लिए धनु का चन्द्र, मिथुन राशि वाली स्त्री के लिए भी धनु का चन्द्र, कर्क राशि वाली स्त्री के लिए मीन का

गृ० शि०

चन्द्र, सिंह राशि वाली स्त्री के लिए मकर का चन्द्र, कन्या राशि वाली स्त्री के लिए वृश्चिक का चन्द्र, तुला राशि वाली स्त्री के लिए मकर का चन्द्र, वृश्चिक राशि वाली स्त्री के लिए धनु का चन्द्र, धनु राशि वाली स्त्री के लिए कन्या का चन्द्र, मकर राशि वाली स्त्री के लिए वृश्चिक का चन्द्र, कुम्भ राशि वाली स्त्री के लिए मिथुन का चन्द्र और मीन राशि वाली स्त्री के लिए कुम्भ का चन्द्र घात चन्द्र होता है । घात चन्द्र में नींव धरने से अनिष्ट फल होता है ।

४. मास– श्रावण, वैशाख, कार्तिक, फाल्गुन, मार्गशीर्ष ये पाँच महीने शुभ हैं ।

५. तिथि– प्रतिपदा, चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी, चतुर्दशी एवं अमावस्या– इस कार्य में इन तिथियों का निषेध है । शेष शुभ हैं ।

गृ०
शि०

६. दिन– रवि, भौम तथा शनिवार को छोड़कर शेष सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार ये शुभ हैं ।

७. नक्षत्र– गृह-निर्माण के लिए अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाषाढ़, उत्तरा फाल्गुनी और रेवती ये सभी नक्षत्र श्रेष्ठ हैं ।

८. योग– सत्ताइस योगों में से दस योगों का इस कार्य में निषेध है, जिनके नाम इस प्रकार हैं– विष्कुम्भ, सुकर्मा, शूल, गण्ड, बज्र, व्याघात, व्यतीपात, परिघ, शुक्ल एवं वैधृति । इन योगों को इस कार्य में सदैव त्यागना ही उचित कहा गया है । शेष १७ योग श्रेष्ठ माने गए हैं ।

९. लग्न– सिंह, कन्या, कुम्भ, वृष, मिथुन, मकर– ये लग्न

गृ०
शि०

नींव धरने में शुभ हैं । ३, ६ तथा ११ वें भाव में पाप ग्रह हों, केन्द्र तथा त्रिकोण में सौम्य ग्रह हों और दशम भाव सबल हो तथा सबल ग्रह हों ।

समय शुभ हो अर्थात् शुक्र और गुरु अस्त न हों । नींव खोदने का और धरने का उपर्युक्त बताये हुए वही मुहूर्त हैं ।

वास्तु पुरुष–अन्धक के नाम के राक्षस और महादेव जी इन दोनों के युद्ध में महादेव जी के शरीर से पसीना गिरा । उससे एक प्राणी उत्पन्न हुआ, जो स्वर्ग और पृथ्वी में अत्यन्त भय देने वाला हुआ । उसे देवगणों ने पकड़ कर नीचे मुख करके पृथ्वी पर गिरा दिया और वरदान दिया कि तेरी पूजा सब लोग करेंगे । वे ही वास्तु पुरुष कहलाते हैं । गृहारम्भ तथा गृह-प्रवेश में ८१ कोष्ठ के वास्तु पुरुष के पूजन का विधान है ।

नींव खोदने की विधि

जिस दिन नींव खोदने का मुहूर्त हो उस दिन प्रातः नित्यनैमित्तिक कर्म कर अपने माता-पिता, इष्टदेव तथा कुल देवादि को प्रणाम कर प्रसन्न मन से फावड़ा तथा पंचोपचार पूजन की सामग्रियाँ लेकर अपने गृह-निर्माण हेतु भूमि की ओर प्रस्थान करें। जहाँ नींव रखनी है वहाँ जाकर पूर्व मुख बैठें। पवित्रीकरण तथा आचमन करें। फिर हाथ जोड़ कर निम्न मंत्र पढें –

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये।
लाभस्तेषां यजस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

जहाँ नींव खोदना है वहाँ पृथिवी पर जल छोड़ें। रोरी, अक्षत, फूल-माला, नैवेद्य, दक्षिणा चढ़ाकर, हाथ में पुष्पाक्षत लेकर प्रार्थना करें, प्रणाम करें।

ॐ आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणि।
उद्धृतासि वराहेण सशैल वन कानने॥

पुनः फावड़े को भी आगे रख कर जल, गन्ध, अक्षत, पुष्पादि चढ़ावें, प्रणाम करें। पश्चात् अपने कुल-देवता का ध्यान कर फावड़ा उठावें और उस स्थान पर पाँच फावड़ा मार कर मिट्टी खोदें तथा

उस मिट्टी को फावड़े से बाहर निकाल दें। तब मजदूरों को नींव खोदने का तथा राजगीर को नींव का धरातल ठीक करने का आदेश देकर अपने निवास-स्थान पर आवें। अब जलपान, भोजनादि ग्रहण करें।

नींव-पूजन-विधि

(गृहारम्भ)

जब नींव खोद दी जाय और गिट्टी, चूना आदि से भर कर पीट दी जाय तथा नींव की जमीन समतल हो जाय तब दीवालों की जोड़ाई के लिए नींव-पूजन करना चाहिये। जो स्थान नींव के लिए चुना गया हो, वहाँ चौक पूर कर गौरी, गणेश, कलश, नौग्रह आदि को पूजा के लिए स्थित करें। यजमान स्नान, संध्या-वन्दनादि करके तथा शुद्ध वस्त्र धारण कर पूर्व मुख बैठें। कुशा से अपने

ऊपर तथा पूजन-सामग्री पर जल छिड़कें –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुण्डरीकाक्षं पुनातु॥

तीन बार आचमन करें–

ॐ नारायणाय नमः। ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

हाथ धोवें –

ॐ हृषीकेशाय नमः।

अनामिका उँगली में कुश की पैंती धारण करें –

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवः उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

गृ॰

शि॰

ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवास्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्तिनस्ताक्ष्योंअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु ॥
पृषदश्वा मरुतः पृष्निमातरः शुभंय्यावानोविदेथेषु जग्मयः ।
अग्निर्जिह्वामनवः सूर चक्षसोविश्वेनोदेवा अवसागमन्निह ॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितं यदायुः ॥
शतमिन्नुशरदोसन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मद्धयारीरिषता युर्गन्तोः ॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तःरिंक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः ।
विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजनाअदितिर्ज्जातमदितिर्जनित्वम् ॥
दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे सुप्रजास्त्वाय सहसा अक्षो जीव शरदश्शतम् ।

३४

गृ॰

शि॰

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिः आपः शान्तिः ।
ओषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिः विश्वेदेवाः शान्तिः ॥
ब्रह्मशान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा । शान्तिरेधि ॥
विस्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्नासुव ॥

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम् ।

३५

गृ०

शि०

प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥
सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे स्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥
अभीप्सितार्थं सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्व विघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥

हाथ का अक्षत-पुष्प गणेश-गौरि पर चढ़ा दें ।

फिर दाहिने हाथ में कुश, अक्षत-पुष्प, द्रव्य लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करें –

हरिः ॐ तत्सत् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य नमः परमात्मने श्री

गृ०

शि०

पुराण पुरुषोतमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धेश्री श्वेतावाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्त्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तै देशे पुण्य क्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे वर्तमाने यथा नाम संवत्सरे यथायाने सूर्ये यथा ऋतौ च महामांगल्यप्रदे मासे ----- मासे ----- पक्षे ----- तिथौ --- वासरे यथा न क्षेत्रे यथा–यथा राशि स्थितेषु ग्रहेषु सत्सु यथा लग्न मुहूर्त योग करणन्वितायाम् एवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य पर्वणि श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलवाप्तये गोत्रः ---- नामाऽहम् मम एतत् स्थानाधि– करणक निर्विघ्नं पूर्वक चिरकालवास सुख सौमनस्य नैरुज्य दीर्घायुष्ट बलपुष्टि पुत्र पौत्र धन-धान्य पश्वादि प्राप्तिकामनया

गृ०
शि०

गृहारम्भं करिष्ये। तदृत्वेन गौरी-गणपत्यादि देवतादीनां पूजनं तथा च भूमिपूजनं, शिलापूजनं, नागपूजनादिकं च करष्ये।

संकल्प पढ़ कर हाथ का कुश अक्षतादि सामने भूमि पर रख दें। गृह में और सभी स्थानों बाहर और भीतर पञ्चगव्य छिड़क दें या छिड़कवा देवें। पश्चात् पृथ्वी, गौरि-गणेश और कलश का स्थापन के लिए भूमि का स्पर्श करें -

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्व धाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथ्वीम् यच्छ पृथ्वींदृ ᳪ ह पृथ्वी माहि ᳪ सीः॥

अब नीचे के मन्त्र से गणेश जी का स्पर्श करें -

ॐ गणानान्त्वागणपति ᳪ हवामहे प्रियाणान्त्वाप्रियपति ᳪ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ᳪ हवामहेव्वसोमम आहमजानि गर्ब्भध मात्वमजासिगर्ब्भधम्॥

फिर गौरि का निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए स्पर्श करें -

ॐ मानस्तोके तनयेमान आयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः

गृ०
शि०

मानों वीरान्नुद्रभामिनौ वधीर्हविष्मन्तः सदमित्व हवामहे॥

निम्न मन्त्र द्वारा कलश के नीचे रखे हुए धान्य छुवें -

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानायत्वा व्यानायत्वा दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान्देवोवः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णा त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वामहीनाम्पयोसि॥

अब कलश का स्पर्श करें -

ॐ आजिघ्रं कलशं मह्यात्वाविशन्त्विन्दवः पुनरूर्ज्जानिवर्तस्वसानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वतीपुनर्माविशताद्रयिः॥

आगे का मन्त्र बोलते हुए कलश में जल छोड़ें -

ॐ वरुणस्योत्तम्भन मसिवरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋत सदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋत सदनमासीद्॥

कलश में गन्ध (रोरी) छोड़ें -

ॐ गन्धद्वाराम् दुराधर्षाम् नित्यपुष्टाम् करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहों पह्वये श्रियम्॥

गृ॰ शि॰

अब नीचे के मंत्र द्वारा कलश में दूब डालें –

ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषपरि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।

निम्न मन्त्र से आम्र पल्लवों को छोड़ें –

ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन। ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

अब इस मन्त्र से पान डालें –

ॐ प्रणाय स्वाहा ऽपानाय स्वाहाव्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥

फिर सुपारी छोड़ें –

ॐ याः फलिनीर्या अफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणी। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः।

गृ॰ शि॰

कलश में कुश छोड़ें –

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

इसके बाद कलश में स्वर्ण द्रव्यादि छोड़ें –

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पति-रेक आसीत् सदधार पृथ्वीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

पुनः नीचे के मंत्र द्वारा कलश को वस्त्र से आच्छादित करें अथवा कलावा बाँधें –

ॐ युवा सुवासाः परिवीत अगात् सउश्रेयान् भवति जायमानः तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसाः देवयन्तः॥

कलश पर यव पूर्ण पात्र रखें –

ॐ पूर्णादवि परापत सुपूर्णा पुनरापत वस्नेव ध्विक्रणावहाऽइषमूर्ज ँ शतक्रतो॥

गृ॰ शि॰ ४२

इसके बाद कलश पर जलता हुआ दीपक रखें –

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा, सूर्योज्योतिः ज्योतिः सूर्यः स्वाहा, अग्निवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥

कलशादि स्थापना के बाद निम्न प्रकार से पूजन करना चाहिये –

पूजन-विधि

हाथ में अक्षत लेकर क्रम से पढ़ता हुआ उक्त देवों पर छोड़ें –

पृथ्वी (१)- ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी । यच्छ नः शर्म्म सप्रथाः ॥

गणेश (२)-ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे वसोमम आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासिगर्ब्भधम् ॥

गृ॰ शि॰ ४३

गौरी (३)—ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वेन क्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम् । इष्णान्निषाण मुम्ममइषाण सर्वलोकम्मइषाण ॥

वरुण (४)—ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः अहेडमानो वरुणेहबोद्धयुरूश ँ समान आयुः प्रमोषीः ॥

अब पुनः अक्षत लेकर उक्त देवों का आवाहन करने के लिए मंत्र पढ़ें और नाम लेकर उन पर उस अक्षत को छोड़ें –

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्जयस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामो प्रतिष्ठ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः पृथिव्यै नमः ।

(यह कह पृथिवी पर अक्षत छोड़ें ।)

ॐ भूर्भुवस्वः सिद्धि बुद्धि सहित गणपतये नमः ।

(यह बोलते हुए गणेश जी पर अक्षत छोड़ें –

गृ॰

शि॰

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः ।

(गौरी पर अक्षत छोड़ें ।)

ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाय नमः ।

(इससे कलश पर अक्षत छोड़ें ।)

इन देवों के आवाहन के पश्चात उसी कलश पर आदि देव ब्रह्मा, विष्णु, शंङ्कर तथा सभी मातृकाओं आदि को भी पुनः अक्षत लेकर नीचे के मन्त्र पढ़ कर उनका आवाहन करें और कलश पर छोड़ें –

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तदीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥
अङ्गैश्च संहिता सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।

गृ॰

शि॰

अत्र गायत्री सावित्रि शान्ति पुष्टकरी तथा ।
आयन्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः ॥

अब पृथ्वी, गौरि, गणेश तथा कलश चारों का यथा विधि पूजन करें । पहले पाद्य के लिए जल देवें –

पाद्य–उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध संयुतम् ।
पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रति गृह्यताम् ॥
पाद्यं समर्पयामि ॐ भूर्भुवः स्वः – पृथिव्यै नमः ।
पाद्यं समर्पयामि ॐ भूर्भुवः स्वः – गणेशाय नमः ।
पाद्यं समर्पयामि ॐ भूर्भुवः स्वः – गौर्यै नमः ॥
पाद्यं समर्पयामि ॐ भूर्भुवः स्वः – वरुणाय नमः ।
पाद्यं समर्पयामि ॐ भूर्भुवः स्वः – सर्वे आवाहित देवेभ्यो नमः ॥

इसी प्रकार हर पूजनोपचार में कहना चाहिए ।

गृ॰ शि॰

अर्घ्य – अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः ।
करुणाकर मे देव गृहाणर्घ्यं नमोऽस्तुते ॥

आचमन–सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि-निर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

स्नान – गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

वस्त्र – सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे ।
मयोपयादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥

अब यहाँ पर दो बार जल छोड़ना चाहिये ।

मन्त्र – वस्त्रान्ते आचमनीयम् पुनः प्रत्याचमनीयं जलं समर्पयामि ॥

यज्ञोपवीत – नवभिर्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

गृ॰ शि॰

चन्दन-गन्ध – श्रीखण्ड चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

रोरी कुंकुम – कुंकुम् कामनादिव्यं कामनाकाम सम्भवम् ।
कुंकुमे नार्चिन्तो देव गृहाण परमेश्वर ॥

अक्षत – अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठ कुंकमोक्तः सुशोभिता ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

फूल माला – माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मया नीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥

सिन्दूर – सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्य सुखवर्द्धनम् ।
सुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥

गृ०

शि०

धूप – वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानाम् धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ (धूपमाघ्रापयामि)

दीप – आज्यं च वर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ (दीपं दर्शयामि)

हाथ धोकर नैवेद्य चढ़ावें –

नैवेद्य – शर्कराघृत संयुक्तं मधुरं स्वादुत्तमम् ।
उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ (नैवेद्यं निवेदयामि)

आचमन–गंगाजलं समानीतं सुवर्णं कलशे स्थितम् ।
आचम्यताम् सुरश्रेष्ठ शुद्धमाचमनीयकम् ॥

फल – इदम् फलम् मया देव स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

गृ०

शि०

ताम्बूल-पूंगीफल – पूंगीफल महादिव्यं नागबल्ली दलैर्युतम् ।
एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलम् प्रतिगृह्यताम् ॥

दक्षिणा – हिरण्यगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

उपर्युक्त प्रकार से पूजन करने के बाद हाथ में पुष्पाक्षत लेता जायें और क्रम से उक्त देवों का नीचे लिखे प्रार्थना करता हुआ उन पर चढ़ाते जावें ।

पृथ्वी – सशैल सागराम् पृथ्वी यथा वहसि मूर्द्धनि ।
यथा मा वह कल्याण सम्पत्सन्ततिभिः सह ॥
अनया पूजा पृथ्वी प्रीयताम् न मम ॥

गणेश – गणेश जी को सर्व प्रथम विशेषार्घ दिया जाता है । एक पियाले या दोने में रोरी, अक्षत, पुष्प और जल लेकर नीचे का मन्त्र पढ़कर गणेश जी को विशेषार्घ के निमित्त चढ़ा दें –

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षकः ।
भक्तानां अभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥

गृ॰ शि॰

द्वै मातुर कृपासिन्धो षाणमातुराग्रज प्रभो ।
वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छतार्थद ॥
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ।

अब पुष्पाक्षत लेकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें –

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुर प्रियाय ।
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ॥
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय ।
गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ।
अनेन पूजनेन गणपतिः प्रीयतां न मम ॥

वरुण – देव दानव संवादे मध्यमाने महोदधौ ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ! विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥

गृ॰ शि॰

त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिता ॥
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ।
त्वत्प्रसादादिकं यज्ञम् कर्तुमीहे जलोद्भव ।
सान्निध्यं कुरु मे देव ! प्रसन्नो भव सर्वदा ॥

अब इसके बाद नवग्रह की स्थापना और पूजा करें । हाथ में अक्षत लेकर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का मन्त्र बोलते हुए आवाहन करें और अक्षत छोड़ें–

सूर्य – ॐ अकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सूर्याय नमः ।

गृ०

शि०

चन्द्र – ॐ इमं देवा असपत्न ᳪ सुवध्वंमहते क्षत्राय महते ज्येष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुस्य पुत्रमष्यै विशऽयेष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्रह्मणानां ᳪ राजा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री चन्द्राय नमः।

भौम – ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां ᳪ रेता ᳪ सि जिन्वति॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भौमाय नमः।

बुध – ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वामिष्टापूर्ते स ᳪ सृजेथामयञ्च। अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरास्मिन् विश्वदेवा यजानश्च सीदत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री बुधाय नमः।

गुरु – ॐ वृहस्पते अतिदर्यो अर्हाद्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु। महीदयच्छ्वसऽऋतप्रजात तदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम्॥

५

गृ०

शि०

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री वृहस्पतये नमः।

शुक्र – ॐ अन्नात्परिश्रुतो रसं ब्राह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ᳪ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतम्मधु॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री शुक्राय नमः।

शनि – ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु नः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री शनिश्चराय नमः।

राहु – ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठ यावृत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री राहवे नमः।

केतु – ॐ केतुं कृण्वन्न केतवेपेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री केतवे नमः।

५३

गृ॰

शि॰

इसके बाद पूर्वोक्त विधि के अनुसार अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र आदि से नवग्रह की पूजा करें। तब नीचे के मन्त्र से उनकी प्रार्थना करें –

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥

इसके बाद एक प्याले में चावल से निम्न देवों का आवाहन कर पूजन करें –

ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ शिवाय नमः, ॐ सरस्वत्यै नमः, ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ दुर्गायै नमः, ॐ धरित्र्यै नमः, ॐ कीर्त्यादि सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः, ॐ ब्राह्मी आदि स्थल मातृकाभ्यो नमः, ॐ ब्रह्मादि सर्वतोभद्र मण्डल देवताभ्यो नमः, ॐ असिताङ्ग भैरवादि लिङ्गतोभद्र देवताभ्यो नमः, ॐ ईश्वरादि अधि देवताभ्यो नमः, ॐ अग्न्यादि प्रत्यधिदेताभ्यो नमः, ॐ गणपत्यादि पंचलोकपालेभ्यो नमः, ॐ इन्द्रादि दशदिक्पालेभ्यो नमः,

गृ॰

शि॰

ॐ अष्टवसुभ्यो नमः, ॐ क्षेत्रपालेभ्यो नमः, ॐ क्रूरभूतेभ्यो नमः, ॐ गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः, ॐ गजाननादि चतुःषष्ठियोगिनीभ्यो नमः, ॐ वासुक्यादि अष्ट सर्पेभ्यो नमः, ॐ अर्कादि सप्तवासरेभ्यो नमः, ॐ प्रतिपदादि पञ्चदशतिथिभ्यो नमः, ॐ अश्विन्यादि सप्तविंशति नक्षत्रेभ्यो नमः, ॐ मेषादि द्वादशराशिभ्यो नमः, ॐ विष्कुम्भादि सप्तविंशति योगेभ्यो नमः, ॐ बवादि एकादश करणेभ्यो नमः, ॐ गंगायै नमः, ॐ यमुनायै नमः, ॐ सरस्वत्यै नमः, ॐ सप्त समुद्रेभ्यो नमः, ॐ सप्तपितृभ्यो नमः, ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, ॐ ग्राम देवेभ्यो नमः, ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः, ॐ कुलदेवताभ्यो नमः, ॐ वास्तु देवताभ्यो नमः, ॐ स्थान देवताभ्यो नमः, ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, ॐ सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः, ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । भो देवताः सायुधाः

सपरिवाराः सवाहनाः इहागच्छत ।

पुनः पूजन कर पुष्पाञ्जलि से प्रार्थना करें –

अनेन पूजनेन भो देवास्सुप्रीता वरदा भवन्तु ।

अब सामने चार पान का पत्ता रखें । एक पान पर वास्तु चिह्न रूप थोड़ा-सा चावल का पुञ्ज रखें, दूसरे पर सोने का नाग, तीसरे पर चाँदी का कच्छप तथा चौथे पान के पत्ते पर पञ्चरत्न रख कर क्रम से वास्तोष्पति, नाग, कच्छप तथा वाराह का आवाहन करें –

(१) ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः । यत्वेमहे प्रतितन्नोजुषस्व शन्नो भव द्विपदेशञ्चतुष्पदे ॥

(२) ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु । ये अन्तरिक्षे ये दिव तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

(३) ॐ यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धया त्वम् । तस्मै देवा अधिब्रवन् नयञ्च ब्रह्मणस्पतिः ॥

(४) ॐ खड्गो वैष्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते । रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिद्ध ७ँ हो मारुतः कृकलासः पिप्पकाशकुनिस्ते शरव्याये विष्वेषां देवानां पृषतः ॥

उपर्युक्त प्रत्येक मन्त्र के बाद 'ॐ मनोजूति.' आदि आवाहन मन्त्र पढ़ें और ॐ भूः भुवःस्वः लगाते हुए वास्तोष्पतये नमः, सर्पेभ्यो नमः, कूर्माय नमः, वराहाय नमः कहते हुए सभी पर अलग-अलग अक्षत छोड़ें । फिर सब को ताँबे की लोटिया में डाल देवें और लोटिया में ही यथा-विधि पूजन कर, लावा, दूध, दूब भी छोड़ देवें । फिर अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना करें –

गृ०

शि०

ॐ वास्तोष्पतिं जगद्देवं सर्वसिद्धि विधायकम् ।
त्वं पूजामि देवेशं वास्तुवं महाबलम् ॥
देवदेवं गणाध्यक्षं पाताल तल वासिनम् ।
शान्तिकर्तारमीशानं तं वास्तुं प्रणतोऽस्म्यहम् ॥
कूर्मदेवं नमस्तुभ्यं सर्वकाम फलप्रद ।
गृहेऽस्मिन् स्थिरोभूत्वा मम स्वस्तिकरो भव ॥
त्रिविक्रमायामित विक्रमाय महावराहाय सुरोत्तमाय ।
श्रीशार्ङ्ग चक्रासिगदाधराय नमोऽस्तु देववर प्रसीद ॥

अक्षत-फूल लोटिया पर चढ़ा दें, फिर ताँबे की कटोरी से बन्द कर दें । लोटिया को लाल कपड़े पर स्थापित करें ।

ईंट की पूजा– पाँच नया ईंटा धोकर सामने अलग-अलग रखें।

गृ०

शि०

पाँचों ईंटों पर स्वस्तिका (卐)बना दें और नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता तथा पूर्णा के नाम से आवाहन-पूजन कर दें । ईंटों के ऊपर कलाई रखकर फिर से ईंटों के ऊपर अक्षत छिड़क कर ब्रह्मा, विष्णु आदि का आवाहन-पूजन करें –

(१) ॐ ब्रह्मणे नमः । (२) ॐ विष्णवे नमः । (३) ॐ रुद्राय नमः । (४) ॐ ईश्वराय नमः । (५) ॐ सदाशिवाय नमः।

पूजा करके हाथ में जल लेकर छोड़ दें, फिर हाथ जोड़ें –

अनेन पूजनेन देवाः प्रीयन्तां न मम । क्षेमकर्तारः पुष्टिकर्तारः वरदा भवन्तु ।

स्थल पूजा – नींव रखने के स्थान पर कुश या आम के पत्ते से जल छिड़कें – ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्थान ऊर्जेदधातन । महेरणाय चक्षसे । यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजतेतहनः । उशतीरिव मातरः ।

गृ० शि०

तस्मा अरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपोजनयथा च नः ॥

अक्षत लेकर भूमि का आवाहन करें –

ॐ आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणि । उद्धृतासि वराहण सशैल वन कानने ॥ कर्मपृष्ठोपरिस्थां च शुक्लवर्णां चतुर्भुजाम् । शंखपद्मधरां चक्र शूलयुक्तां धरां भजे ॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः । अयनः शो सु च दधत ॥

पश्चात् – 'ॐ मनोजूतिः' आदि आवाहन मन्त्र के बाद 'ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः, भूम्यै नमः, आधार शक्तये नमः ।' कह कर अक्षत भूमि पर छोड़ दें तथा भूमि की पूजा कर दें । फिर अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना करें --

गृ० शि०

देवेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगीषया । यथाचलो गिरिमेरु रावासमचलं कुरु ॥ आरोपितं गृहाधारं तथा त्वम चलाभव । क्षेमकर्त्री, तुष्टिकर्त्री, पुष्टिकर्त्री वरदाजी भव ॥

खूँटी-पूजन– एक खैर की खूँटी लेकर अपने सामने रखें, उसकी यथाविधि पूजन कर प्रार्थना करें –

ॐ यथाचलो गुरुर्मेरुरावासमचलं मम । आरोपितं गृहस्तम्भं तथा त्वं अचलं कुरु ॥

कन्नी-बसूली की पूज–राजगीर (मिस्त्री) से कन्नी-बसूली लेकर गङ्गाजल से धोवें, फिर उसमें कलाई नारा (रक्षासूत्र) बाँध कर अपने सामने रखें और पूजा कर हाथ में अक्षत लेकर प्रार्थना करें –

ॐ त्वष्ट्रा त्वम् निर्मितः पूर्व लोकनां हितकाम्यया । पूजितोऽसि खनित्रि त्वं सिद्धिदो भव नो ध्रुवम् ॥

अब राजगीर (मिस्त्री) को तिलक लगावें –

ॐ अज्ञानात् ज्ञानतो वापि दोषास्युश्च यदुद्भवाः । नाशयत्व हितान् सर्वान् विश्वकर्मन् नमोऽस्तुते ॥

मिस्त्री को कन्नी-बसूली का मूल्य (नेग) देकर आज्ञा माँगें तब कन्नी-बसूली का प्रयोग करें । मिस्त्री से आज्ञा प्राप्त होने पर पूजा-स्थल का सारा सामान हटा देवें । फिर पूजा की हुई जमीन पर बीचो-बीच खैर की खूँटी गाड़ दें । खूँटी बिल्कुल जमीन के भीतर चली जाय । इस खूँटी के ऊपर ताँबे की लोटियामय ढक्कन को ज्यों-की-त्यों उठा कर रख दें । कटोरी के ऊपर भी लावा, सेतुआ, सेंवार, दूब आदि रख दें । चूना-सिमेन्ट आदि से लोटिया को ढककर उसी के ऊपर पाचों ईंटा जिसकी पूजा की गयी है, उठा कर जोड़ाई

कर दें । ईंटा कम पड़े तो ग्रौर ५ या ७ ईंटा जरूरत के अनुसार लेकर चूना-सीमेन्ट से मजबूत जोड़ दें जिससे किसी तरह से लोटिया बाहर न निकल सके । जोड़ाई के बाद ईंटा के ऊपर सीमेन्ट लगा कर चौकोर चबूतरा जैसा बना दें और उसके ऊपर रोरी से स्वस्तिका (卐) बना दें । फिर स्वस्तिका का पूजन कर हाथ में अक्षत-फूल लेकर प्रार्थना करें –

ॐ स्थिरोभव वीड्वंग आशुर्भव वार्ज्यवन् ।
पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्ने पुरीषवाहणः ॥
नन्दे त्वं ननिदनीपुसां त्वामत्र स्थापयाम्यहम् ।
वेश्मनि त्विह संविष्ठा यावच्चन्द्रार्क तारकाः ॥
आयुः कामं श्रियं देहि देववासिनि नन्दिनि ।
अस्मिन् रक्ष त्वया कार्या सदा वेश्मनि यत्नतः ॥

गृ॰ शि॰

भद्रे त्वं सर्वदा भद्रं लोकानां कुरु काश्यपि ।
आयुर्दा कामदा देवि सुखदा च सदा भव ॥
गर्गगोत्र समुद्भूतां त्रिनेत्रां च चतुर्भुजाम् ।
गृहेऽस्मिन् स्थापयाम्यद्य जयां चारु विलोचनाम् ॥
रिक्तं त्वं रिक्त दोषानि सिद्धि मुक्तिप्रदे शुभे ।
सर्वदा सर्व दोषघ्नि तिष्ठास्मिन् विश्वरूपिणी ॥
पूर्णे त्वं सर्वदा पूर्णान् लोकांश्च कुरु काश्यपि ।
आयुर्दा कामदा देवि धनदा सुतदा तथा ॥
गृहधारा वास्तुमयी वास्तुदीपेन संयुता ।
त्वां मृते नास्ति जगतामाधारश्च जगत् प्रिये ॥

अक्षत-फूल उसी ईंटों की नींव पर चढ़ा दें । फिर कर्पूर की आरती करें –

गृ॰ शि॰

ॐ चन्द्रमा मनसोजातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत । श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् । सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

यजमान ब्राह्मण को तिलक लगावें –

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षाम् नित्य पुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।

दक्षिणा संकल्प करें –

अद्य गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् कृतैतत् शिलान्यास कर्मणः (यथाशक्ति) दक्षिणां अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

ब्राह्मण लेकर 'स्वस्ति' कहें । यजमान यथाशक्ति भूयसी दान भी करें । फिर गोदान, अन्नदान, स्वर्णदान, वस्त्र दानादि भी जो

हो सके, कर दें ।

अब पुरोहित यजमान को तिलक लगावें–

ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्‌गणाः । तिलकन्तु प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये ॥

पुराहित यजमान के हाथ में रक्षा-सूत्र (कलाई नारा) बाँधें ।

ॐ येन बद्धोबली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षेमाचलमाचल ॥

अब यजमान निम्न मन्त्र को बोलते हुए हाथ जोड़ें –

ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणदेव तद् विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः ॥
यस्य स्मृत्या च नमोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

श्री विष्णुः ! श्री विष्णुः !! श्री विष्णुः !!!

पुरोहित यजमान को फल-फूल प्रसाद आदि देवें--

ॐ मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥

यजमान ब्राह्मणों, गुरुजनों (बड़े-बूढ़ों) का पाँव छुवें ।

****

देहली न्यास विधि

सर्वप्रथम चौखट लगाने को 'देहली-न्यास' कहते हैं । शिलान्यास के समान ही देहली न्यास भी करना चाहिये । यजमान पूर्वाह्न काल में स्त्रीसहित स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूर्वमुख हो शुद्ध आसन पर बैठें । पश्चात् 'ॐ अपवित्रः पवित्रो॰' इस मन्त्र से अपने

गृ॰

शि॰

ऊपर एवं पूजन सामग्री पर जल छोड़ें, आचमन करें, पवित्री धारण करें, स्वस्ति वाचन तथा मंगल श्लोक का पाठ कर संकल्प करें –

देशकालौ सङ्कीर्त्य० अमुक गोत्रः अमुक शर्मा सपत्नीकोऽहं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सर्वारिष्ट प्रशान्ति पूर्वकाऽयुरारोग्येश्वर्या वृद्ध्यर्थम् एतद्गृहेऽत्रावच्छिन्नभूम्यधिष्ठित देवतोपरोधाजनितोपसर्ग निवृत्तये गृहाधिष्ठित वास्तु पुरुष प्रीतये च वास्तुपूजनपूर्वकं देहलीन्यासं करिष्ये । तदङ्गत्वेन गणपत्यादि देवानां तथा गृहाणां पूजनम् करिष्ये ।

इसके पश्चात् पृथ्वी, गौरि-गणेश आदि का यथावत् पूजन करें । चौखट को गङ्गाजल से धोवें । ऊपर को पाँच स्थान पर रोरी हल्दी, सिन्दूर आदि लगाकर पूजर करें । अगरबत्ती से धूप दिखावें। फल, बतासा, पान, दक्षिणा चढ़ावें । फिर उस स्थान की भी पूजा

गृ॰

शि॰

करें जहाँ चौखट लगाना है । अब चौखट उठा कर 'ॐ स्थिरो भव वीड्वङ्ग० ।' आदि मन्त्र से चौखट के स्थान पर स्थापित करें ।

इसके बाद एक लोहे की अँगूठी, हल्दी की गाँठ, पीली सरसों तथा कौड़ी को पीले वस्त्र में बाँध कर पोटली बना लेवें और उस पोटली को चौखट के ऊपर मध्य भाग में बाँध देवें ।

मन्त्र – यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्य शतानीकाय सुमनस्माना । तन्य आबध्नामि शतशारदायार्युष्माञ्जरदिष्ट्य यथासम् ॥

(कुछ लोग-काले कपड़े में राई-नमक, चोकर आदि भी बाँध देते हैं)

चौखट की प्रार्थना करें –

प्रार्थयामि त्वमहं देव ! शालाया अधिपस्तु यः । प्रार्थ

प्रसङ्गेन गृहार्थे यन्मया कृतम् ॥ मूलच्छेदं तृणच्छेदं कृमि-कीधारण निपातितम् । हवनं जलजीवानां भूमौ शस्त्रेण घातनम् ॥ अनृतं भाषणं तच्च किञ्चिद् वृक्षस्य पातनम् । एतत्सर्वं क्षमस्वेमा यत् करिष्यामि दुष्कृतम् ॥ गृहार्थे यत्कृतं पापमज्ञानेनाऽथ चेतसा । तत्सर्वं क्षम्यतां देव ! गृहशालां शुभां कुरु ॥

अब यजमान आचार्य तथा ब्राह्मणादि को दिक्षणा देवें । गोदान, सांगता, भूयसी, ब्राह्मण भोजनादि का संकल्प करें ।

पुरोहित यजमान का अभिषेक कर तिलक करें, रक्षा बाँधें, विसर्जन करवा कर आशीर्वाद तथा प्रसाद देवें । फिर 'विष्णु स्मरण' पूर्णता के लिए करावें ।

छत-पूजन– छत पड़ जाने पर गृहस्वामी को पहिले की ही तरह छत के ऊपर भी पूजन करना चाहिए ।

पूर्ण रूपेण घर तैयार हो जाने पर गृह स्वामी कलश, तुलसी, दही आदि लेकर सपरिवार ब्राह्मणों एवं गुरुजनों को आगे कर उस घर में प्रवेश करता है । ब्राह्मण लोग स्वस्ति वाचन एवं मङ्गल श्लोक का पाठ करते हैं और स्त्रियाँ मङ्गल-गीत गाती हैं

इति शुभम्